

01. दो बैलों की कथा

प्र.1 कांजीहौस में कैद पशुओं की हाज़िरी क्यों ली जाती होगी?

उत्तर कांजीहौस वह स्थान होता है, जहाँ पर दूसरों की फसल का नुकसान करने वाले पशुओं को पकड़कर बंद कर दिया जाता है। यह एक तरह से पशुओं की जेल होती है। इसे मवेशीखाना या बाड़ा भी कहा जाता है। कांजीहौस के प्रबंधक की ज़िम्मेदारी होती है कि वह उन पशुओं को सुरक्षित रखे। पशुओं की हाज़िरी इसलिए ली जाती होगी, ताकि यह पता चल सके कि कोई पशु भाग तो नहीं गया।

प्र.2 छोटी बच्ची को बैलों के प्रति प्रेम क्यों उमड़ आया?

उत्तर छोटी बच्ची की माँ सौतेली थी, जिसका व्यवहार उस बच्ची के प्रति अच्छा नहीं था। वह बात-बात पर उसे मारती थी। इधर गया भी बैलों को बात-बात पर मारता और अत्याचार करता था। छोटी बच्ची अपनी ही तरह बैलों के दर्द को महसूस करती थी। उसे बैलों की स्थिति और स्वयं की स्थिति एक समान लगने लगी, इसलिए छोटी बच्ची के मन में बैलों के प्रति प्यार उमड़ आया।

प्र.3 कहानी में बैलों के माध्यम से कौन-कौन-से नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं?

उत्तर कहानी में बैलों के माध्यम से निम्नलिखित नीति-विषयक मूल्य उभरकर आए हैं

- (i) अत्यधिक सरलता और सहनशीलता दोष बन जाती है।
- (ii) आज्ञादी प्राप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है।
- (iii) अन्याय व अत्याचार के सामने झुकना नहीं चाहिए, बल्कि उनका डटकर मुकाबला करना चाहिए।
- (iv) पशुओं के प्रति प्रेम भाव रखना चाहिए।
- (v) भ्रातृत्व की भावना बनाए रखनी चाहिए।
- (vi) निहत्थे पर वार नहीं करना चाहिए।
- (vii) औरत पर हाथ नहीं उठाना चाहिए, बल्कि उसका सम्मान करना चाहिए।

01. दो बैलों की कथा

प्र.4 प्रस्तुत कहानी में प्रेमचंद ने गंधे की किन स्वभावगत विशेषताओं के आधार पर उसके प्रति रूढ़ अर्थ 'मूर्ख' का प्रयोग न कर किस नए अर्थ की ओर संकेत किया है?

उत्तर प्रेमचंद ने गंधे के लिए 'मूर्ख' शब्द का प्रयोग न कर सरलता एवं सहनशीलता के नए अर्थ में सद्गुणों की ओर संकेत किया है। इन सद्गुणों के आधार पर गंधे को ऋषि-मुनियों की श्रेणी में रखा है।

प्रेमचंद के अनुसार, सद्गुणों का इतना अनादर होते हुए कहीं नहीं देखा। लेखक ने कहानी में सीधेपन की दुर्दशा को दिखाया है, मूर्खता को नहीं। अतः ऋषि-मुनियों के गुणों को धारण करने वाला प्राणी मूर्ख नहीं है, बल्कि अतिशय सद्गुणों से युक्त है, जिसकी कद्र नहीं होती है।

प्र.5 किन घटनाओं से पता चलता है कि हीरा-मोती में गहरी दोस्ती थी?

उत्तर हीरा-मोती में गहरी दोस्ती का पता निम्नलिखित घटनाओं से चलता है

समर्पण का भाव गाड़ी में जोते जाने पर दोनों की कोशिश रहती कि गाड़ी का ज़्यादा-से-ज़्यादा भार स्वयं के कंधे पर रखे। दूसरे साथी के कंधे पर अधिक भार न पड़े।

मित्र पर पड़े डंडे की प्रतिक्रिया जब गया हीरा की नाक पर डंडा मारता है, तो मोती तिलमिला उठता है। उससे हीरा का कष्ट देखा नहीं जाता है।

विपत्ति में साथ न छोड़ना मटर के खेत में दोनों ने एक-दूसरे के लिए अपनी जान जोखिम में डाली। इसके अतिरिक्त कांजीहौस में मोती रस्सी में बँधे हीरा को छोड़कर मोती अन्य जानवरों के साथ नहीं गया।

प्र.6 "लेकिन औरत जात पर सींग चलाना मना है, यह भूल जाते हो"-हीरा के इस कथन के माध्यम से स्त्री के प्रति प्रेमचंद के दृष्टिकोण को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर हीरा के इस कथन से पुरुष प्रधान समाज में स्त्रियों की स्थिति की ओर संकेत किया गया है। स्त्रियों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। पुरुष वर्ग शारीरिक यातनाएँ देने से भी पीछे नहीं हटता। अतः सभ्य गुणों के प्रतीक हीरा-मोती के माध्यम से लेखक ने पुरुष प्रधान

01. दो बैलों की कथा

समाज को स्मरण कराया है कि स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए। एक सभ्य समाज एवं नैतिक मानवीय मूल्यों की स्थापना की जानी चाहिए।

प्र.7 कृषक समाज में पशु और मनुष्य के आपसी संबंधों को कहानी 'दो बैलों की कथा' में किस तरह व्यक्त किया गया है?

उत्तर 'दो बैलों की कथा' में भैरो की लड़की का व्यवहार हमदर्दीपूर्ण एवं संवेदनशील है। इससे किसानों की संवेदनशीलता का पता चलता है। इधर झूरी भी बैलों को 'हीरा' एवं 'मोती' नाम देता है और उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करता है। यही कारण है कि दोनों बैल गया के उपेक्षित एवं क्रूर व्यवहार को स्वीकार नहीं कर पाते हैं। उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं और अनेक कष्टों को झेलते हुए अंततः अपने स्वामी के पास लौट आते हैं।

प्र.8 "इतना तो हो ही गया कि नौ-दस प्राणियों की जान बच गई। वे सब तो आशीर्वाद देंगे।" मोती के इस कथन के आलोक में उसकी विशेषताएँ बताइए।

उत्तर मोती अन्याय एवं अत्याचार का विरोध करता है। कांजीहौस में पशुओं पर दया करके हीरा द्वारा दीवार तोड़ने के काम में मोती साथ देता है। मोती, हीरा को रस्सियों के बंधन स्वीकार करने के संदर्भ में कहता है कि मुझे ऐसा बंधन स्वीकार है। कम-से-कम मेरे बँधने से नौ-दस जानवरों की जान तो बच गई। अब वे सब आशीर्वाद देंगे। इस कथन से मोती का साहस, दयालुता, उग्रता एवं बलिदान आदि विशेषताओं का पता चलता है।

प्र.9 आशय स्पष्ट कीजिए

(क) अवश्य ही उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति थी, जिससे जीवों में श्रेष्ठता का दावा करने वाला मनुष्य वंचित है।

(ख) उस एक रोटी से उनकी भूख तो क्या शांत होती, पर दोनों के हृदय को मानो भोजन मिल गया।

01. दो बैलों की कथा

उत्तर (क) प्रस्तुत कहानी में हीरा-मोती मूक जानवर होकर भी एक-दूसरे के मनोभावों को भली-भाँति समझ लेते हैं, जबकि दूसरी ओर मनुष्य को वाक्शक्ति (बोलने की शक्ति) का वरदान प्रकृति द्वारा प्राप्त है, परंतु बोलकर भी वह एक-दूसरे के मनोभावों को समझने में अज्ञानता कर देता है, इसलिए कह सकते हैं कि जानवरों के पास अवश्य ही कोई गुप्त शक्ति है, जिससे मनुष्य वंचित है।

(ख) हीरा और मोती गया की निष्ठुरता और अपमानपूर्ण व्यवहार से क्षुब्ध थे, इसलिए गया द्वारा दिया जाने वाला सूखा भूसा उन्हें स्वीकार नहीं था। जब दोनों बैल भूखे थे, उसी समय उसके घर में रहने वाली छोटी लड़की दो रोटियाँ दोनों बैलों के मुँह में देकर चली गई। उस रोटी से उनकी भूख तो नहीं मिटी, पर स्नेह रूपी भूख को भोजन मिल गया। उनका मन संतुष्ट हो गया।

प्र.10 गया ने हीरा-मोती को दोनों बार सूखा भूसा खाने को दिया, क्योंकि

(क) गया पराए बैलों पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था।

(ख) गरीबी के कारण खली आदि खरीदना उसके बस की बात न थी।

(ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

(घ) उसे खली आदि सामग्री की जानकारी न थी।

उत्तर (ग) वह हीरा-मोती के व्यवहार से बहुत दुःखी था।

रचना और अभिव्यक्ति

प्र.11 हीरा और मोती ने शोषण के खिलाफ़ आवाज़ उठाई, लेकिन उसके लिए प्रताड़ना भी सही। हीरा-मोती की इस प्रतिक्रिया पर तर्क सहित अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर हीरा और मोती का अन्याय के खिलाफ़ आवाज़ उठाना बिल्कुल भी गलत नहीं है। मेरे विचार से अगर वे प्रतिक्रिया न करते, चुपचाप सहते जाते, तो गया उनका और अधिक शोषण करता। काम भी जमकर लेता, शारीरिक प्रताड़ना भी होती और उपयुक्त भोजन भी न मिलता। उन्हें गया की गुलामी सहनी पड़ती। प्रारंभ में ही विरोध करके बैलों ने अपने नए

01. दो बैलों की कथा

मालिक को सावधान कर दिया कि उनका अधिक शोषण नहीं किया जा सकता। अंत में इसी प्रयास ने उन्हें शोषण से मुक्ति भी दिलाई।

प्र.12 क्या आपको लगता है कि यह कहानी आज़ादी की लड़ाई की ओर भी संकेत करती है?

उत्तर प्रस्तुत कहानी के सभी पात्र आज़ादी की लड़ाई का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। कांजीहौस जेल का प्रतीक है। दोनों बैल क्रांतिकारी, संवेदनशील भारतीयों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, जिन्हें अपने देश (झूरी के घर) से बहुत प्रेम है। गया ब्रिटिश शासक का प्रतीक है। बैल (हीरा-मोती) पर होने वाले अत्याचार भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों पर होने वाले दमन के प्रतीक हैं, जिसका लगातार विरोध करते हुए वे स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत हैं। निरंतर संघर्ष करने के कारण ही अंत में भारतीयों की भाँति हीरा-मोती भी शोषण और गुलामी से मुक्त होकर स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं।

Sources: Govindo Sir - Hindi Teacher, BMSSS

Hindi Guide Book